الجزء ١٢

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦

6. और ज़मीन में कोई चलने फिरनेवाला (जानदार) नहीं है मगर (येह कि) उसका रिज़्क़ अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और वोह उसके ठहरने की जगह को और उसके अमानत रखे जानेकी जगहको (भी) जानता है, हर बात किताबे रौशन (लौहे़ महफ़ूज़) में (दर्ज) है।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

7. और वोही (अल्लाह) है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की बालाई-व-ज़ेरीं काइनातों) को छ रोज़ (या'नी तख़्लीक़ो इर्तिक़ा के छ अद्वारो मराहिल) में पैदा फ़रमाया और (तख़्लीक़े अर्ज़ी से क़ब्ल) उसका तख़्ते इक़्तिदार पानी पर था (और उसने उससे ज़िन्दगी के तमाम आसार को और तुम्हें पैदा किया) ताकि वोह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अ़मल के ए'तिबार से बेहतर है?, और अगर आप येह फ़रमाएं कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िन्दा कर के) उठाए जाओगे तो काफ़िर यक़ीनन (येह) कहेंगे कि येह तो सरीह़ जादू के सिवा कुछ (और) नहीं है।

وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ ع ١ ٨

8. और अगर हम उनसे चंद मुक़र्ररह दिनों तक अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र कर दें तो वोह यक़ीनन कहेंगे कि उसे किस चीज़ने रोक रखा है, ख़बरदार ! जिस दिन वोह (अ़ज़ाब) उन पर आएगा (तो) उनसे फेरा न जाएगा और वोह (अ़ज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ۝٩

9. और अगर हम इन्सान को अपनी जानिबसे रह़मतका मज़ा चखाते हैं फिर हम उसे (किसी वजहसे) उससे वापस ले लेते हैं तो वोह निहायत मायूस (और) ना शुक्र गुज़ार हो जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ

10. और अगर हम उसे (कोई) ने'मत चखाते हैं उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंच चुकी थी तो ज़रूर केह

عَنِّیْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾

उठता है कि मुझसे सारी तक्लीफ़ें जाती रहीं, बेशक वोह बड़ा ख़ुश होनेवाला (और) फ़ख़्र करनेवाला (बन जाता) है।

اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿۱۱﴾

11. सिवाए उन लोगोंके जिन्होंने सब्र किया और नेक अ़मल करते रहे, (तो) ऐसे लोगों के लिए मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا یُوْحٰۤی اِلَیْكَ وَ ضَآىِٕقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ یَّقُوْلُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ نَذِیْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ؕ﴿۱۲﴾

12. भला क्या येह मुमकिन है कि आप उसमें से कुछ छोड़ दें जो आप की तरफ़ वही किया गया है और उससे आपका सीनए (अत्हर) तंग होने लगे (इस ख़याल से) कि कुफ़्फ़ार येह केहते हैं कि इस (रसूल) पर कोई ख़ज़ाना क्यों न उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया, (ऐसा हरगिज़ मुमकिन नहीं ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म !) आप तो सिर्फ़ डर सुनानेवाले हैं (किसी को दुन्यवी लालच या सज़ा देनेवाले नहीं), और अल्लाह हर चीज़ पर निगेहबान है।

اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَیٰتٍ وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۳﴾

13. क्या कुफ़्फ़ार येह केहते हैं कि पयग़म्बरने इस (क़ुरआन) को ख़ुद घड़ लिया है फ़रमा दीजिए : तुम (भी) इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाहके सिवा (अपनी मदद के लिए) जिसे भी बुला सक्ते हो बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

فَاِلَّمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. (ऐ मुसलमानो !) सो अगर वोह तुम्हारी बात क़ुबूल न करें तो यक़ीन रखो कि क़ुरआन फ़क़त अल्लाहके इ़ल्म से उतारा गया है और येह कि उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस क्या (अब) तुम इस्लाम पर (साबित क़दम) रहोगे।

مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا وَ زِیْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَیْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِیْهَا

15. जो लोग (फ़क़त) दुन्यवी ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत (व आराइश) के तालिब हैं हम उनके आ'माल का पूरा पूरा बदला इसी दुनिया में दे देते हैं और उन्हें इस

وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

(दुनिया के सिले) में कोई कमी नहीं दी जाती।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَ حَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

16. येह वोह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में कुछ (हिस्सा) नहीं सिवाए आतिशे (दोज़ख़) के, और वोह सब (आ'माल अपने उख़रवी अज्र के हिसाबसे) अकारत हो गए जो उन्होंने दुनिया में अंजाम दिए थे और वोह (सब कुछ) बातिलो बेकार हो गया जो वोह करते रहे थे (क्योंकि उनका हिसाब पूरे अज्र के साथ दुनिया में ही चुका दिया गया है और आख़िरत के लिए कुछ नहीं बचा)।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَ يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۫ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

17. वोह शख़्स जो अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर है और अल्लाह की जानिबसे एक गवाह (कुरआन) भी उस शख़्सकी ताईदो तक़्वियत के लिए आ गया है और इससे क़ब्ल मूसा (عليه السلام) की किताब (तौरात) भी जो रहनुमा और रह़मत थी (आ चुकी हो), येही लोग इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं, क्या (येह) और (काफ़िर) फ़िरक़ोंमें से वोह शख़्स जो इस (कुरआन) का मुन्किर है (बराबर हो सक्ते हैं) जबकि आतिशे दोज़ख़ उसका ठिकाना है, सो (ऐ सुननेवाले !) तुझे चाहिए कि तू इससे मु-त-अ़ल्लिक़ ज़रा भी शक में न रहे, बेशक येह (कुरआन) तेरे रबकी तरफ़ से ह़क़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَ يَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾

18. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोह्तान बांधता है, ऐसे ही लोग अपने रबके हुज़ूर पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे : येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला था, जान लो कि ज़ालिमों पर अल्लाह की ला'नत है।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19. जो लोग (दूसरों को) अल्लाहकी राह से रोकते हैं और उसमें कजी तलाश करते हैं, और वोही लोग आख़िरत के मुन्किर हैं।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي
الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ
الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. येह लोग (अल्लाहको) ज़मीन में आ़जिज़ कर सक्नेवाले नहीं और न ही उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार हैं। उनके लिए अ़ज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा (क्यों कि) न वोह (ह़क़ बात) सुनने की ताक़त रखते थे और न (ह़क़ को) देख ही सक्ते थे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. येही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुक़्सान पहुंचाया और जो बोह्तान वोह बांधते थे वोह (सब) उनसे जाते रहे।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. येह बिल्कुल ह़क़ है कि यक़ीनन वोही लोग आख़िरत में सब से ज़ियादह ख़सारह उठानेवाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और अपने रब के हुज़ूर आ़जिज़ी करते रहे येही लोग अह्ले जन्नत हैं वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ
وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ
مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ ع ٢ ١٦ ٢

24. (काफ़िरो मुस्लिम) दोनों फ़रीक़ों की मिसाल अंधे और बेह्रे और (उसके बर अ़क्स) देखनेवाले और सुननेवाले की सी है क्या दोनों का ह़ाल बराबर है क्या तुम फिर (भी) नसीह़त क़ुबूल नहीं करते।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۫

25. और बेशक हमने नूह़ (علیہ السلام) को उनकी क़ौमकी

وقف لازم

إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

तरफ़ भेजा (उन्हों ने उनसे कहा) मैं तुम्हारे लिए खुला डर सुनानेवाला (बन कर आया) हूं।

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

26. कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तुम पर दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब (की आमद) का ख़ौफ़ रखता हूं।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن
قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا
وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ۚ وَمَا نَرَىٰ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ
كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

27. सो उनकी क़ौमके कुफ़्र करनेवाले सरदारों और वडेरों ने कहा : हमें तो तुम हमारे अपने ही जैसा एक बशर दिखाई देते हो और हमने किसी (मोअ़ज़्ज़ज़ शख़्स) को तुम्हारी पैरवी करते हुए नहीं देखा सिवाए हमारे (मुआ़शरे के) सतही राए रखनेवाले पस्तो हक़ीर लोगों के (जो बे सोचे समझे तुम्हारे पीछे लग गए हैं), और हम तुम्हारे अंदर अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलतो बरतरी (या'नी ताक़तो इक़्तिदार, मालो दौलत या तुम्हारी जमाअ़त में बड़े लोगों की शुमूलियत अल ग़रज़ ऐसा कोई नुमायां पहलू) भी नहीं देखते बल्कि हम तो तुम्हें झूटा समझते हैं।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ
بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ
عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا
وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾

28. (नूह़ عليه السلام ने) कहा : ऐ मेरी क़ौम! बताओ तो सही अगर मैं अपने रबकी तरफ़ से रौशन दलील पर भी हूं और उसने मुझे अपने हुज़ूर से (ख़ास) रह़मत भी बख़्शी हो मगर वोह तुम्हारे ऊपर (अंधों की तरह़) पोशीदह कर दी गई हो, तो क्या हम उसे तुम पर जब्रन मुसल्लत कर सक्ते हैं दर आं हालीकि तुम उसे ना पसंद करते हो?

وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَمَا أَنَا
بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّهُم
مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ

29. और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (दा'वतो तब्लीग़) पर कोई मालो दौलत (भी) तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और मैं (तुम्हारी ख़ातिर) उन (ग़रीब और पस मान्दह) लोगों को जो ईमान ले आए हैं धुत्कारनेवाला भी नहीं हूं (तुम उन्हें हक़ीर मत समझो येही ह़क़ीकत में मोअ़ज़्ज़ज़ हैं)। बेशक येह लोग अपने रबकी मुलाक़ात से बेहरायाब होनेवाले हैं और मैं तो

दर ह़क़ीक़त तुम्हें जाहिल (व बे फ़हम) क़ौम देख रहा हूं।

قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

30. और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उनको धुतकार दूं तो अल्लाह (के ग़ज़ब) से (बचाने में) मेरी मदद कौन कर सक्ता है, क्या तुम ग़ौर नहीं करते?

وَ يٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾

31. और मैं तुमसे (येह) नहीं केहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं (या'नी मैं बेहद दौलतमंद हूं) और न (येह कि) मैं (अल्लाह के बताए बिग़ैर) खुद ग़ैब जानता हूं और न मैं येह केहता हूं कि मैं (इन्सान नहीं) फ़रिश्ता हूं (मेरी दा'वत करिश्माती दा'वों पर मब्नी नहीं है) और न उन लोगों की निस्बत जिन्हें तुम्हारी निगाहें ह़क़ीर जान रही हैं येह केहता हूं कि अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा (येह अल्लाहका अम्र और हर शख़्स का नसीब है), अल्लाह बेहतर जानता है जो कुछ उनके दिलों में है, (अगर ऐसा कहूं तो) बेशक मैं उसी वक़्त ज़ालिमों में से हो जाऊंगा।

وَ لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّ لَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۖۚ اِنِّيْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

32. वोह केहने लगे : ऐ नूह़ ! बेशक तुम हमसे झगड़ चुके सो तुमने हमसे बहुत झगड़ा कर लिया बस अब हमारे पास वोह (अ़ज़ाब) ले आओ जिसका तुम हमसे वा'दा करते हो अगर तुम (वाक़ई) सच्चे हो।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

33. (नूह़ عليه السلام ने) कहा : वोह (अ़ज़ाब) तो बस अल्लाह ही तुम पर लाएगा अगर उसने चाहा और तुम (उसे) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾

34. और मेरी नसीह़त (भी) तुम्हें नफ़ा' न देगी ख़्वाह मैं तुम्हें नसीह़त करने का इरादाह करूं अगर अल्लाहने तुम्हें गुमराह करने का इराद फ़रमा लिया हो, वोह तुम्हारा रब है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ

تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾

जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ
افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَ اَنَا
بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ ع

35. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) क्या येह लोग केहते हैं कि पयग़म्बर ने इस क़ुरआन को ख़ुद घड़ लिया है ? फ़रमा दीजिए अगर मैं ने इसे घड़ लिया है तो मेरे जुर्म (का वबाल) मुझ पर होगा और मैं इससे बरी हूं जो जुर्म तुम कर रहे हो।

وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ
مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ
فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ ۚ

36. और नूह (عليه السلام) की तरफ़ वह़ी की गई कि (अब) हरगिज़ तुम्हारी क़ौममें से (मज़ीद) कोई ईमान नहीं लाएगा सिवाए उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, सो आप उनके (तक्ज़ीबो इस्तेहज़ा के) कामों से रंजीदह न हों।

وَ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا
وَ لَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ
اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और तुम हमारे हुक्मके मुताबिक़ हमारे सामने एक कश्ती बनाओ और ज़ालिमों के बारे में मुझसे (कोई) बात न करना, वोह ज़रूर ग़र्क़ किए जाएंगे।

وَ يَصْنَعُ الْفُلْكَ ۖ قف وَ كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ
مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ
اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ
كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ؕ

38. और नूह (عليه السلام) कश्ती बनाते रहे और जब भी उनकी क़ौमके सरदार उनके पाससे गुज़रते उनका मज़ाक़ उड़ाते। नूह (عليه السلام उन्हें जवाबन) केहते : अगर (आज) तुम हमसे तमस्ख़ुर करते हो तो (कल) हम भी तुमसे तमस्ख़ुर करेंगे जैसे तुम तमस्ख़ुर कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ
يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ
مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾

39. सो तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि किस पर (दुनिया में ही) अ़ज़ाब आता है जो उसे ज़लीलो रुस्वा कर देगा और (फिर आख़िरत में भी किस पर) हमेशा क़ाइम रेहनेवाला अ़ज़ाब उतरता है।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ
التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

40. यहां तक कि जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा और तन्नूर (पानी के चश्मोंकी तरह) जोशसे उबलने लगा (तो) हमने फ़रमाया (ऐ नूह !) उस कश्ती में हर जिन्स में

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ اٰمَنَ ؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۴۰﴾

से (नर और मादह) दो अ़दद पर मुश्तमिल जोड़ा सवार कर लो और अपने घरवालों को भी (ले लो), सिवाए उनके कि जिन पर (हलाकत का) फ़रमान पहले सादिर हो चुका है और जो कोई ईमान ले आया है (उसेभी साथ ले लो), और चंद (लोगों) के सिवा उनके साथ कोई ईमान नहीं लाया था।

وَ قَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۱﴾

41. और नूह (عليه السلام) ने कहा : तुम लोग उसमें सवार हो जाओ अल्लाह ही के नामसे उसका चलना और उसका ठहरना है। बेशक मेरा रब बड़ा ही बख़्शनेवाला निहायत महेरबान है।

وَ هِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَ نَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَ كَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَ لَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾

42. और वोह कश्ती पहाड़ों जैसी (तूफ़ानी) लेहरों में उन्हें लिए चलती जा रही थी कि नूह (عليه السلام) ने अपने बेटेको पुकारा और वोह उनसे अलग (काफ़िरों के साथ खड़ा) था ऐ मेरे बेटे ! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न रह।

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَ حَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾

43. वोह बोला : मैं (कश्ती में सवार होने कि बजाए) अभी किसी पहाड़की पनाह ले लेता हूं वोह मुझे पानीसे बचा लेगा। नूह (عليه السلام) ने कहा : आज अल्लाहके अ़ज़ाब से कोई बचानेवाला नहीं है मगर उस शख़्स को जिस पर वोही (अल्लाह) रहम फ़रमा दे, इसी अस्ना में दोनों (या'नी बाप बेटे) के दरमियान (तूफ़ानी) मौज हाइल हो गई सो वोह डूबनेवालों में हो गया।

وَ قِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَ يٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَ غِيْضَ الْمَآءُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ وَ اسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ

44. और (जब सफ़ीनए नूह عليه السلام के सिवा सब डूब कर हलाक हो चुके तो) हुक्म दिया गया : ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल जा और ऐ आस्मान! तू थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम कर दिया गया और

وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठेहरी और फ़रमा दिया गया कि ज़ालिमों के लिए (रह़मतसे) दूरी है।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

45. और नूह़ (عليه السلام)ने अपने रबको पुकारा और अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! बेशक मेरा लड़का (भी) तो मेरे घरवालों में दाख़िल था और यक़ीनन तेरा वा'दा सच्चा है और तू सबसे बड़ा ह़ाकिम है।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. इर्शाद हुवा : ऐ नूह़ ! बेशक वोह तेरे घरवालों में शामिल नहीं क्योंकि उसके अ़मल अच्छे न थे पस मुझसे वोह सवाल न किया करो जिसका तुम्हें इ़ल्म न हो, मैं तुम्हें नसीह़त किए देता हूं कि कहीं तुम नादानों में से (न) होजाना।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. (नूह़ عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मैं इस बातसे तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वोह सवाल करूं जिसका मुझे कुछ इ़ल्म न हो, और अगर तू मुझे न बख़्शेगा और मुझ पर रह़म (न) फ़रमाएगा (तो) मैं नुक़्सान उठानेवालों में से होजाऊंगा।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾

48. फ़रमाया गया : ऐ नूह़ ! हमारी तरफ़से सलामती और बरकतों के साथ (कश्तीसे) उतर जाओ जो तुम पर हैं और उन तब्क़ात पर हैं जो तुम्हारे साथ हैं, और (आइन्दह फिर) कुछ तबक़े ऐसे भी होंगे जिन्हें हम (दुन्यवी ने'मतों से) बेहरायाब फ़रमाएंगे फिर उन्हें हमारी तरफ़से दर्दनाक अ़ज़ाब आ पहुंचेगा।

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ ع

49. येह (बयान उन) ग़ैबकी ख़बरों में से है जो हम आपकी तरफ़ वह़ी करते हैं, इससे क़ब्ल न आप इन्हें जानते थे और न आपकी क़ौम, पस आप सब्र करें । बेशक बेहतर अंजाम परहेज़गारों ही के लिए है।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾
يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾
وَ يٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ
تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى
قُوَّتِكُمْ وَ لَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾
قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّ مَا
نَحْنُ بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ
وَ مَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾
اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ
اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْۤ اُشْهِدُ
اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾
مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ
لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾
اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَ

50. और (हमने) क़ौमे आ़द की तरफ़ उनके भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को (भेजा), उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम अल्लाहकी इ़बादत करो उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मा'बूद नहीं, तुम अल्लाह पर (शरीक रखनेका) महज़ बोहतान बांधनेवाले हो।

51. ऐ मेरी क़ौम! मैं इस (दा'वतो तब्लीग़) पर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र फ़क़त उस (के ज़िम्मए करम) पर है जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है, क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

52. और ऐ लोगो! तुम अपने रबसे (गुनाहोंकी) बख़्शिश मांगो फिर उनकी जनाब में (सिद्क़ दिलसे) रुजूअ़ करो, वोह तुम पर आस्मानसे मूसलाधार बारिश भेजेगा और तुम्हारी कुव्वत पर कुव्वत बढ़ाएगा और तुम मुजरिम बनते हुए उससे रू गर्दानी न करना।

53. वोह बोले : ऐ हूद ! तुम हमारे पास कोई वाज़ेह़ दलील ले कर नहीं आए हो और न हम तुम्हारे केहने से अपने मा'बूदों को छोड़नेवाले हैं और न ही हम तुम पर ईमान लानेवाले हैं।

54. हम इसके सिवा (कुछ) नहीं केह सक्ते कि हमारे मा'बूदों में से किसीने तुम्हें (दिमाग़ी ख़लल की) बीमारी में मुब्तिला कर दिया है। हूद (अलैहिस्सलाम) ने कहा : बेशक मैं अल्लाहको गवाह बनाता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं उनसे ला तअ़ल्लुक़ हूं जिन्हें तुम शरीक गरदान्ते हो।

55. उस (अल्लाह) के सिवा तुम सब (बशुमूल तुम्हारे मा'बूदाने बातिला) मिल कर मेरे ख़िलाफ़ (कोई) तदबीर कर लो फिर मुझे मोहलत भी न दो।

56. बेशक मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है जो मेरा

رَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ
بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

(भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, कोई चलनेवाला (जानदार) ऐसा नहीं मगर वोह उसे उसकी चोटीसे पकड़े हुए है (या'नी मुकम्मल तौर पर उसके क़ब्जए कुदरत में है)। बेशक मेरा रब (हक़्क़ो अ़दलमें) सीधी राह पर (चलने से मिलता) है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ
اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ
رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ
شَيْـًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

57. फिर भी अगर तुम रू गर्दानी करो तो मैंने वाक़िअ़तन वोह (तमाम अह्काम) तुम्हें पहुंचा दिए हैं जिन्हें ले कर मैं तुम्हारे पास भेजा गया हूं, और मेरा रब तुम्हारी जगह किसी और क़ौमको क़ाइम मुक़ाम बना देगा, और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ न सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ
وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾

58. और जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा (तो) हमने हूद (عليه السلام) को और उनके साथ ईमानवालों को अपनी रह्मत के बाइ़स बचा लिया, और हमने उन्हें सख़्त अ़ज़ाब से नजात बख़्शी।

وَتِلْكَ عَادٌ ڐ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾

59. और येह (क़ौमे) आ़द है जिन्हों ने अपने रबकी आयतों का इन्कार किया और अपने रसूलों की ना फ़रमानी की और हर जाबिर (व मु-त-कब्बिर) दुश्मने ह़क़ के हुक्म की पैरवी की।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾

60. और इस दुनियामें (भी) उनके पीछे ला'नत लगा दी गई और क़ियामतके दिन (भी लगेगी)। याद रखो कि (क़ौमे) आ़दने अपने रबके साथ कुफ़्र किया था। ख़बरदार ! हूद (عليه السلام) की कौमे आ़द के लिए (रह़मत से) दूरी है।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

61. और (हमने क़ौमे) समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह (عليه السلام) को भेजा। उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम!

غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾

अल्लाहकी इ़बादत करो तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसीने तुम्हें ज़मीन से पैदा फ़रमाया और उसमें तुम्हें आबाद फ़रमाया सो तुम उससे मुआ़फ़ी मांगो फिर उसके हुज़ूर तौबा करो । बेशक मेरा रब क़रीब है दुआएं क़ुबूल फ़रमानेवाला है।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾

62. वोह बोले : ऐ सालेह ! इससे क़ब्ल हमारी क़ौममें तुम ही उम्मीदों का मर्कज़ थे, क्या तुम हमें उन (बुतों) की परस्तिश करने से रोक रहे हो जिनकी हमारे बापदादा परस्तिश करते रहे हैं और जिस (तौह़ीद) की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो यक़ीनन हम उसके बारे में बड़े इज़्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿۶۳﴾

63. सालेह़ (عليه السلام)ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! ज़रा सोचो तो सही अगर मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर (क़ाइम) हूं और मुझे उसकी जानिब से (ख़ास) रह़मत नसीब हुई है, (इसके बाद उस के अह़काम तुम तक न पहुंचा कर) अगर मैं उसकी ना फ़रमानी कर बैठूं तो कौन शख़्स है जो अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचाने में मेरी मदद कर सक्ता है? पस सिवाए नुक़्सान पहुंचाने के तुम मेरा (और) कुछ नहीं बढ़ा सकते।

وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿۶۴﴾

64. और ऐ मेरी क़ौम! येह अल्लाह की (ख़ास तरीक़े से पैदा कर्दह) ऊंटनी है (जो) तुम्हारे लिए निशानी है सो इसे छोड़े रखो (येह) अल्लाहकी ज़मीनमें खाती फिरे और इसे कोई तक्लीफ़ न पहुंचाना वरना तुम्हें क़रीब (वाक़े' होनेवाला) अ़ज़ाब आ पकड़ेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ

65. फिर उन्होंने उसे (कोंचें काट कर) ज़ब्ह कर डाला, सालेह (عليه السلام)ने कहा : (अब) तुम अपने घरों में (सिर्फ़) तीन दिन (तक) ऐ़श कर लो, येह वा'दा है जो (कभी)

مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾

झूटा न होगा।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا
وَ مِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

66. फिर जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा (तो) हमने सालेह (علیہ السلام)को और जो उनके साथ ईमानवाले थे अपनी रह़मतके सबब से बचा लिया और उस दिनकी रुस्वाई से (भी नजात बख़्शी) । बेशक आपका रब ही ताक़तवर ग़ालिब है।

وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ لا

67.और ज़ालिम लोगों को हौलनाक आवाज़ने आ पकड़ा, सो उन्होंने सुब्ह़ इस तरह़ की कि अपने घरों में (मुर्दह ह़ालत) में औंधे पड़े रेह गए।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا اِنَّ ثَمُوْدَا
كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع ٦ ٨ ٦

68. गोया वोह कभी उनमें बसे ही न थे, याद रखो ! (क़ौमे) समूदने अपने रबसे कुफ़्र किया था। ख़बरदार! (क़ौमे) समूदके लिए (रह़मत से) दूरी है।

وَ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ
فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

69. और बेशक हमारे फिरस्तादह फ़रिश्ते इब्राहीम (علیہ السلام)के पास ख़ुश ख़बरी ले कर आए उन्होंने सलाम कहा, इब्राहीम (علیہ السلام)ने भी (जवाबन) सलाम कहा, फिर (आप علیہ السلام ने) देर न की यहां तक कि (उनकी मेज़बानी के लिए) एक भुना हुवा बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ
نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ
قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى
قَوْمِ لُوْطٍ ؕ ﴿٧٠﴾

70. फिर जब (इब्राहीम علیہ السلام ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) की तरफ़ नहीं बढ़ रहे तो उन्हें अजनबी समझा और (अपने) दिलमें उनसे कुछ ख़ौफ़ महसूस करने लगे, उन्होंने कहा : आप मत डरिए ! हम क़ौमे लूतकी तरफ़ भेजे गऐ हैं।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ ۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ

71. और उनकी अहलिया (सारह पास ही) खड़ी थीं तो वोह हंस पड़ीं सो हमने उनकी (ज़ौजा) को इस्ह़ाक़ (علیہ السلام)की और इस्ह़ाक़(علیہ السلام)के बाद या'कूब (علیہ السلام) की

يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾

बिशारत दी।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰىٓ ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا
بَعْلِىْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

72. वोह केहने लगीं : वाए हैरानी! क्या मैं बच्चा जनूंगी हालांकि मैं बूढ़ी(हो चुकी)हूं और मेरे येह शौहर(भी) बूढ़े हैं। बेशक येह तो बड़ी अ़जीब चीज़ है।

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ
الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

73. फ़रिश्तोंने कहा : क्या तुम अल्लाहके हुक्म पर तअ़ज्जुब कर रही हो? ऐ घरवालो ! तुम पर अल्लाहकी रहमत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वोह क़ाबिले सताइश (है) बुज़ुर्गीवाला है।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ
وَجَاۗءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ
قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾

74. फिर जब इब्राहीम(عليه السلام)से ख़ौफ़ जाता रहा और उनके पास बिशारत आ चुकी तो हमारे (फ़रिश्तों के) साथ क़ौमे लूतके बारे में झगड़ने लगे।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

75. बेशक इब्राहीम(عليه السلام) बड़े मुतहम्मिल मिज़ाज आहो ज़ारी करनेवाले हर ह़ालमें हमारी तरफ़ रुजूअ़ करनेवाले थे।

يٰٓـاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ
قَدْ جَاۗءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ
اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

76. (फ़रिश्तोंने कहा :) ऐ ईब्राहीम! इस (बात)से दरगुज़र कीजिए बेशक अब तो आपके रबका हुक्मे (अ़ज़ाब) आ चुका है, और उन्हें अ़ज़ाब पहुंचने ही वाला है जो पलटाया नहीं जा सक्ता।

وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ
بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ
هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾

77. और जब हमारे फ़िरस्तादह फ़रिश्ते लूत (عليه السلام)के पास आए (तो) वोह उनके आने से परेशान हुए और उनके बाइ़स (उनकी) ताक़त कमज़ोर पड़ गई और केहने लगे : येह बहुत सख़्त दिन है (फ़रिश्ते निहायत ख़ूबरू थे और ह़ज़रत लूत (عليه السلام)को अपनी क़ौमकी बुरी आ़दतका इ़ल्म था सो मुम्किना फ़ित्ने के अंदेशे से परेशान हुए)।

وَجَاۗءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۭ
وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ

78. (सो वोही हुवा जिसका उन्हें अंदेशा था) और लूत (عليه السلام)की क़ौम (मेहमानों की ख़बर सुनते ही) उनके पास

قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ
اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ
فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ
رَّشِيْدٌ ﴿۷۸﴾

दौड़ती हुई आ गई, और वोह पहले ही बुरे काम किया करते थे। लूत (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी (ना फ़रमान) क़ौम! येह मेरी (क़ौम की) बेटियां हैं येह तुम्हारे लिए (ब.तरीके़ निकाह) पाकीज़ा-ओ-ह़लाल हैं सो तुम अल्लाहसे डरो और मेरे मेहमानों में (अपनी बेह़याई के बाइ़स) मुझे रुस्वा न करो। क्या तुममें से कोई भी नेक सीरत आदमी नहीं है?

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ
مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿۷۹﴾

79. वोह बोले : तुम खूब जानते हो कि हमें तुम्हारी (क़ौमकी) बेटियोंसे कोई ग़रज़ नहीं, और तुम यक़ीनन जानते हो जो कुछ हम चाहते हैं।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى
رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿۸۰﴾

80. लूत (عليه السلام) ने कहा : काश ! मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की हिम्मत होती या मैं (आज) किसी मज़बूत क़िल्ए़ में पनाह ले सक्ता।

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ
مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ
اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ
اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ
اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾

81. (तब फ़रिश्ते) केहने लगे : ऐ लूत ! हम आपके रबके भेजे हुए हैं। येह लोग तुम तक हरगिज़ न पहुंच सकेंगे, पस आप अपने घरवालों को रातके कुछ हिस्सेमें ले कर निकल जाएं और तुम में से कोई मुड़ कर (पीछे) न देखे मगर अपनी औ़रतको (साथ न लेना), यक़ीनन उसे (भी) वोही (अ़ज़ाब) पहुंचने वाला है जो उन्हें पहुंचेगा। बेशक उन (के अ़ज़ाब) का मुक़र्ररह वक़्त सुब्ह़ (का) है, क्या सुब्ह़ क़रीब नहीं है?।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً
مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾

82. फिर जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा तो हमने (उलट कर) उस बस्ती के ऊपर के हिस्से को निचला हिस्सा कर दिया और हमने उस पर पथ्थर और पकी हुई मिट्टी के कंकर बरसाए जो पै दर पै (और तेह ब तेह) गिरते रहे।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ
مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ ع ۱۵ النصف

83. जो आपके रब की तरफ़से निशान किए हुए थे। और येह (संगरेज़ों का अ़ज़ाब) ज़ालिमों से (अब भी) कुछ दूर नहीं है।

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ وَ لَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ
وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّيْۤ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾

84. और (हमने अहले) मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (عليه السلام को भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं है, और नाप और तौल में कमी मत किया करो बेशक मैं तुम्हें आसूदह हाल देखता हूं और मैं तुम पर ऐसे दिनके अज़ाब का ख़ौफ़ (मेहसूस) करता हूं जो (तुम्हें) घेर लेनेवाला है।

وَ يٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ
بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ
وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

85. और ऐ मेरी क़ौम! तुम नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरे किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दिया करो और फ़साद करनेवाले बन कर मुल्कमें तबाही मत मचाते फिरो।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَ مَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾

86.जो अल्लाह के दिए में बच रहे (वोही) तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमानवाले हो, और मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ
اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ
نَّفْعَلَ فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ
لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

87. वोह बोले : ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येही हुक्म देती है कि हम उन (मा'बूदों) को छोड़ दें जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा करते रहे हैं या येह कि हम जो कुछ अपने अमवाल के बारे में चाहें (न) करें? बेशक तुम ही (एक) बड़े तहम्मुलवाले हिदायत याफ़्ता (रेह गए) हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ
عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ
رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَ مَاۤ اُرِيْدُ اَنْ
اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ
اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ

88. शुऐब (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! ज़रा बताओ कि अगर मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपनी बारगाह से उ़मदा रिज़्क़ (भी) अ़ता फ़रमाया (तो फिर ह़क़ की तबलीग़ क्यों न करूं), और मैं येह (भी) नहीं चाहता कि तुम्हारे पीछे लग कर (ह़क़ के ख़िलाफ़) ख़ुद वोही कुछ करने लगूं जिससे मैं तुम्हें मना'

وَ مَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾

कर रहा हूं, मैं तो जहां तक मुझसे हो सक्ता है (तुम्हारी) इस्लाह ही चाहता हूं, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही (की मदद) से है, मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी कि तरफ़ रुजूअ़ करता हूं।

وَ يٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْۤ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَاۤ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَ مَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾

89. और ऐ मेरी क़ौम! मुझसे दुश्मनी-व-मुख़ालिफ़त तुम्हें यहां तक न उभार दे (कि जिसके बाइस) तुम पर वोह (अ़ज़ाब) आ पहुंचे जैसा (अ़ज़ाब) क़ौमे नूह़ या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह़को पहुंचा था, और क़ौमे लूत (का ज़माना तो) तुमसे कुछ दूर नहीं (गुज़रा)।

وَ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾

90. और तुम अपने रबसे मग़फ़िरत मांगो फिर उसके हुज़ूर (सिद्क़ दिलसे) तौबा करो, बेशक मेरा रब निहायत महरबान मह़ब्बत फ़रमानेवाला है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَ لَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾

91. वोह बोले : ऐ शुऐ़ब ! तुम्हारी अक्सर बातें हमारी समझमें नहीं आतीं और हम तुम्हें अपने मुआ़शरे में एक कमज़ोर शख़्स जानते हैं, और अगर तुम्हारा कुंबा न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते और (हमें इसी का लिहाज़ है वरना) तुम हमारी निगाहमें कोई इ़ज़्ज़तवाले नहीं हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْۤ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾

92. शुऐ़ब (علیہ السلام)ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुंबा तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से ज़ियादह मोअ़ज़्ज़ज़ है ? और तुमने उसे (या'नी अल्लाह तआ़ला को गोया) अपने पसे पुश्त डाल रखा है। बेशक मेरा रब तुम्हारे (सब) कामों को अह़ाते में लिए हुए है।

وَ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ مَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ

93. और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं अपना काम कर रहा हूं। तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि किस पर वोह अ़ज़ाब आ पहुंचता है जो रुस्वा कर डालेगा और कौन है जो झूटा है ? और तुम भी इन्तिज़ार करते रहो

وَارْتَقِبُوٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

और मैं (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूं।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا
وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

94. और जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा तो हमने शुऐ़ब (عليه السلام) को और उनके साथ ईमान वालों को अपनी रह़मत के बाइस बचा लिया और ज़ालिमों को ख़ौफ़नाक आवाज़ने आ पकड़ा, सो उन्होंने सुब्ह़ इस ह़ालमें की कि अपने घरों में (मुर्दह ह़ालतमें) औंधे पड़े रेह गए।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا
لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع ١٢ ٨

95. गोया वोह उनमें कभी बसे ही न थे। सुनो! (अह्ले) मद्यन के लिए हलाकत है जैसे (क़ौमे) समूद हलाक हुई थी।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا
وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

96. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को (भी) अपनी निशानियों और रौशन बुरहान के साथ भेजा।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ
فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

97. फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास, तो (क़ौमके) सरदारों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की हालां कि फ़िरऔ़नका हुक्म दुरुस्त न था।

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ
النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾

98. वोह क़ियामतके दिन अपनी क़ौमके आगे आगे चलेगा बिल आख़िर उन्हें आतिशे दोज़ख़ में ला गिराएगा, और वोह दाख़िल किए जानेकी कितनी बुरी जगह है।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾

99. और उस दुनियामें (भी) ला'नत उनके पीछे लगा दी गई और क़ियामत के दिन (भी उनके पीछे रहेगी), कितना बुरा अ़तिय्या है जो उन्हें दिया गया है।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ
عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾

100. (ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म !) येह (उन) बस्तियों के कुछ ह़ालात हैं जो हम आपको सुना रहे हैं उनमें से कुछ बर क़रार हैं और (कुछ) नीस्तो नाबूद हो गईं।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ

101. और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था लेकिन उन्होंने (ख़ुदही) अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उनके

الَّتِیۡ یَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ مِنۡ شَیۡءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمۡرُ رَبِّکَ ؕ وَ مَا زَادُوۡہُمۡ غَیۡرَ تَتۡبِیۡبٍ ﴿۱۰۱﴾

वोह झूटे मा'बूद जिन्हें वोह अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए जब आपके रबका हुक्मे (अ़ज़ाब) आया,और वोह (देवता) तो सिर्फ़ उनकी हलाकतो बरबादी में इज़ाफ़ा कर सके।

وَ کَذٰلِکَ اَخۡذُ رَبِّکَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰی وَ ہِیَ ظَالِمَۃٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَہٗۤ اَلِیۡمٌ شَدِیۡدٌ ﴿۱۰۲﴾

102. और इसी तरह आपके रब की पकड़ हुवा करती है जब वोह बस्तियों की इस हालमें गिरफ़्त फ़रमाता है कि वोह ज़ालिम बन चुकी होती हैं। बेशक उस की गिरफ़्त दर्दनाक (और) सख़्त होती है।

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ الۡاٰخِرَۃِ ؕ ذٰلِکَ یَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّہُ النَّاسُ وَ ذٰلِکَ یَوۡمٌ مَّشۡہُوۡدٌ ﴿۱۰۳﴾

103. बेशक इन (वाक़िआ़त) में उस शख़्स के लिए इ़ब्रत है जो आख़िरत के अज़ाब से डरता है। येह (रोज़े क़ियामत) वोह दिन है जिस के लिए सारे लोग जमा' किए जाएंगे और येही वोह दिन है जब सबको ह़ाज़िर किया जाएगा।

وَ مَا نُؤَخِّرُہٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ﴿۱۰۴﴾

104. और हम उसे मुअख़्ख़र नहीं कर रहे हैं मगर मुक़र्ररह मुद्दत के लिए (जो पहले से तय है)।

یَوۡمَ یَاۡتِ لَا تَکَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ۚ فَمِنۡہُمۡ شَقِیٌّ وَّ سَعِیۡدٌ ﴿۱۰۵﴾

105. जब वोह दिन आएगा कोई शख़्स (भी) उसकी इजाज़त के बिग़ैर कलाम नहीं कर सकेगा फिर उनमें बा'ज़ बद बख़्त होंगे और बा'ज नेक बख़्त।

فَاَمَّا الَّذِیۡنَ شَقُوۡا فَفِی النَّارِ لَہُمۡ فِیۡہَا زَفِیۡرٌ وَّ شَہِیۡقٌ ﴿۱۰۶﴾ۙ

106. सो जो लोग बद बख़्त होंगे (वोह) दोज़ख़ में (पड़े) होंगे उनके मुक़द्दर में वहां चीख़ना और चिल्लाना होगा।

خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّکَ ؕ اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیۡدُ ﴿۱۰۷﴾

107. वोह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आस्मान और ज़मीन (जो उस वक़्त होंगे) क़ाइम रहें मगर येह कि जो आपका रब चाहे। बेशक आपका रब जो इरादा फ़रमाता है कर गुज़रता है।

وَ اَمَّا الَّذِیۡنَ سُعِدُوۡا فَفِی الۡجَنَّۃِ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

108. और जो लोग नेक बख़्त होंगे (वोह) जन्नतमें होंगे वोह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आस्मान और ज़मीन (जो

وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ط
عَطَاءً غَيْرَ مَجْذُوذٍ ﴿١٠٨﴾
فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِمَّا يَعْبُدُ
هٰؤُلَاءِ ط مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ
آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ ط وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ
نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

ع ٩ ١٤ ٩

उस वक़्त होंगे) क़ाइम रहें मगर येह कि जो आपका रब चाहे, येह वोह अ़ता होगी जो कभी मुन्क़ते' न होगी।

109. पस (ऐ सुननेवाले !) तू उनके बारे में किसी (भी) शक में मुब्तिला न हो जिनकी येह लोग पूजा करते हैं। येह लोग (किसी दलीलो बसीरतकी बिना पर) परस्तिश नहीं करते मगर (सिर्फ़ उस तरह् करते हैं) जैसे उनसे क़ब्ल उनके बापदादा परस्तिश करते चले आ रहे हैं, और बेशक हम उन्हें यक़ीनन उनका पूरा हिस्सए (अ़ज़ाब) देंगे जिसमें कोई कमी नहीं की जाएगी।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيهِ ط وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ط
وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾
وَإِنَّ كُلًّا لَمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَالَهُمْ ط إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

110. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी फिर उसमें इख़्तिलाफ़ किया जाने लगा, और अगर आपके रबकी तरफ़से एक बात पेहले सादिर न हो चुकी होती तो उनके दरमियान ज़रूर फ़ैसला कर दिया गया होता, और वोह यक़ीनन उस (क़ुरआन) के बारे में इज़्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं।

111. बेशक आपका रब उन सबको उनके आ'माल का पूरा पूरा बदला देगा। वोह जो कुछ कर रहे हैं यक़ीनन वोह उससे खूब आगाह है।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ
مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ط إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

112. पस आप साबित क़दम रहिए जैसा कि आपको हुक्म दिया गया है और वोह भी (साबित क़दम रहे) जिसने आपकी मइय्यत में (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया है, और (ऐ लोगो !) तुम सरकशी न करना, बेशक तुम जो कुछ करते हो वोह उसे खूब देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ لا وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ

113. और तुम ऐसे लोगों की तरफ़ मत झुकना जो ज़ुल्म कर रहे हैं वरना तुम्हें आतिशे (दोज़ख़) आ छुएगी और तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई मददगार न होगा फिर

اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

तुम्हारी मदद (भी) नहीं की जाएगी।

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ﴿۱۱۴﴾

114. और आप दिन के दोनों किनारों में और रातके कुछ हिस्सोंमें नमाज़ क़ाइम कीजिए। बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। येह नसीहत क़ुबूल करनेवालों के लिए नसीहत है।

وَ اصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115. और आप सब्र करें बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता।

فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾

116. सो तुमसे पेहले की उम्मतों में ऐसे साहिबाने फ़ज़्लो ख़िरद क्यों न हुए जो लोगों को ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी से रोकते बजुज़ उनमें से थोड़ेसे लोगों के जिन्हें हमने नजात दे दी, और ज़ालिमोंने ऐशो इशरत (के उसी रास्ते) की पैरवी की जिसमें वोह पड़े हुए थे और वोह (आदी) मुजरिम थे।

وَ مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

117. और आपका रब ऐसा नहीं कि वोह बस्तियों को ज़ुल्मन हलाक कर डाले दर आं हाली कि उसके बाशिन्दे नेकूकार हों।

وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۙ﴿۱۱۸﴾

118. और अगर आपका रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही उम्मत बना देता (मगर उसने जब्रन ऐसा न किया बल्कि सबको मज़हब के इख़्तियार करने में आज़ादी दी) और (अब) येह लोग हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

119. सिवाए उस शख़्स के जिस पर आपका रब रहम फरमाए, और इसी लिए उसने उन्हें पैदा फ़रमाया है, और आपके रब का फ़रमान पूरा हो चुका बेशक मैं दोज़ख़ को जिन्नों और इन्सानों में से सब (अहले बातिल) से ज़रूर भर दूंगा।

وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ
الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ
وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ
وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

120. और हम रसूलों की ख़बरों में से सब ह़ालात आपको सुना रहे हैं जिससे हम आपके क़ल्बे (अत्हर) को तक़विय्यत देते हैं, और आपके पास इस (सूरत) मे ह़क़ और नसीह़त आई है और अह्ले ईमान के लिए इ़ब्रत (व याद दहानी भी)।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا
عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ لا

121. और आप उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते फ़रमा दें तुम अपनी जगह अ़मल करते रहो (और) हम (अपने मुक़ाम पर) अ़मल पैरा हैं।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

122.और तुम (भी)इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं।

وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَ اِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ ع ۱۰ ۱۲

123. और आस्मानों और ज़मीन का (सब) ग़ैब अल्लाह ही के लिए है और उसी की तरफ़ हर एक काम लौटाया जाता है सो उसकी इ़बादत करते रहें और उसी पर तवक्कल किए रखें और तुम्हारा रब तुम सब लोगों के आ'माल से ग़ाफ़िल नहीं है।

आयातुहा 111 | 12 सूरतु यूसुफ़ मक्कियतुन 53 | रुकूआ़तुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۱﴾ ق

1.अलिफ़ लाम रा (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह रौशन किताब की आयतें हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿۲﴾

2. बेशक हमने उस किताब को क़ुरआन की सूरत में ब-ज़बाने अ़-रबी उतारा ताकि तुम (उसे बराहे रास्त) समझ सको।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ
بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَ

3. (ऐ ह़बीब!) हम आपसे एक बेहतरीन क़िस्सा बयान करते हैं इस क़ुरआन के ज़रीए़ जिसे हमने आपकी तरफ़

اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ (٣)

वही किया है, अगरचे आप इससे क़ब्ल (इस क़िस्से से) बेख़बर थे।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ
رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ (٤)

4. (वोह क़िस्सा यूं है) जब यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने बाप से कहा : ऐ मेरे वालिदे गिरामी ! मैंने (ख़्वाब में) ग्यारह सितारों को और सूरज और चांद को देखा है, मैंने उन्हें अपने लिए सज्दह करते हुऐ देखा है।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى
اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ
الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (٥)

5. उन्होंने कहा : ऐ मेरे बेटे ! अपना येह ख़्वाब अपने भाइयों से बयान न करना वरना वोह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई पुर फ़रेब चाल चलेंगे । बेशक शैतान इन्सानका खुला दुश्मन है।

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ
اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٦) ع

6. इसी तरह़ तुम्हारा रब तुम्हें (बुज़ुर्गी के लिए) मुन्तख़ब फ़रमा लेगा और तुम्हें बातों के अंजाम तक पहुंचना (या'नी ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म) सिखाएगा और तुम पर और औलादे या'कूब पर अपनी ने'मत तमाम फ़रमाएगा जैसा कि उसने इससे क़ब्ल तुम्हारे दोनों बाप (या'नी परदादा और दादा) इब्राहीम और इस्ह़ाक़ (عليهما السلام) पर तमाम फ़रमाई थी, बेशक तुम्हारा रब खूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ
اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ (٧)

7. बेशक यूसुफ़ (عليه السلام) और उनके भाइयों (के वाक़िए) में पूछनेवालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ
اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ
اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ (٨)

8. (वोह वक़्त याद कीजिए) जब यूसुफ़ (عليه السلام) के भाइयोंने कहा कि वाक़ई यूसुफ (عليه السلام) और उसका भाई हमारे बापको हमसे ज़ियादह मह़बूब हैं हालांकि हम (दस अफ़राद पर मुश्तमिल) ज़ियादह क़वी जमाअ़त हैं। बेशक हमारे वालिद (उनकी मह़ब्बत की) खुली वारफ़्तगी में गुम हैं।

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا

9. (अब येही ह़ल है कि) तुम यूसुफ़ (عليه السلام) को क़त्ल कर

يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا
مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩

डालो या दूर किसी ग़ैर मा'लूम इलाक़े में फेंक आओ (इस तरह) तुम्हारे बाप की तवज्जोह ख़ालिसतन तुम्हारी तरफ़ हो जाएगी और उसके बाद तुम (तौबा करके) सालेहीन की जमाअ़त बन जाना।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ
وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠

10. उनमें से एक केहनेवाले ने कहा : तुम यूसुफ (عليه السلام) को क़त्ल मत करो और उसे किसी तारीक कुंवें की गेहराई में डाल दो उसे कोई राहगीर मुसाफ़िर उठा ले जाएगा अगर तुम (कुछ) करनेवाले हो (तो येह करो)।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَالَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى
يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝١١

11. उन्हों ने कहा : ऐ हमारे बाप ! आपको क्या हो गया है आप यूसुफ़ (عليه السلام) के बारे में हम पर ए'तिबार नहीं करते हालांकि हम यक़ीनी तौर पर उसके ख़ैर ख़्वाह हैं।

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ
وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢

12. आप उसे कल हमारे साथ भेज दीजिए वोह ख़ूब खाए और खेले और बेशक हम उसके मुहाफ़िज़ हैं।

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ
وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝١٣

13. उन्होंने कहा : बेशक मुझे येह ख़याल मग़्मूम करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं (इस ख़याल से भी) ख़ौफ़ ज़दह हुं कि उसे भेड़िया खा जाए और तुम उस (की हिफ़ाज़त) से ग़ाफ़िल रहो।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ
عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤

14. वोह बोले : अगर उसे भेड़िया खा जाए हालांकि हम एक क़वी जमाअ़त भी (मौजूद) हों तो हम तो बिल्कुल नाकारह हुए।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ
يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ
هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٥

15. फिर जब वोह उसे ले गए और सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए कि उसे तारीक कुंएं की गेहराई में डाल दें तब हमने उसकी तरफ़ वही भेजी (ऐ यूसुफ़ ! परेशान न होना एक वक़्त आएगा) कि तुम यक़ीनन उन्हें उनका येह काम जतलाओगे और उन्हें (तुम्हारे बुलंद रुत्बेका) शऊ़र नहीं होगा।

وَجَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और वोह (यूसुफ़ ﷺ को कुंएं में फेंक कर) अपने बापके पास रातके वक़्त (मक्कारी का रोना) रोते हुऐ आए।

قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾

17. केहने लगे : ऐ हमारे बाप ! हम लोग दौड़में मुक़ाबला करने चले गए और हमने यूसुफ़ (ﷺ) को अपने सामान के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़ियेने खा लिया, और आप (तो) हमारी बातका यक़ीन (भी) नहीं करेंगे अगरचे हम सच्चे ही हों।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَ اللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और वोह उसके क़मीज़ पर झूटा खून (भी) लगा कर ले आए (या'क़ूब ﷺ ने) कहा : (हक़ीक़त येह नहीं है) बल्कि तुम्हारे (हासिद) नफ़्सोंने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिए आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला), पस (इस हादिसे पर) सब्र ही बेहतर है, और अल्लाह ही से मदद चाहता हूं इस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَ اَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और (उधर) राहगीरों का एक क़ाफ़ला आ पहुंचा तो उन्होंने अपना पानी भरनेवाला भेजा सो उसने अपना डोल (उस कुंएं में) लटकाया, वोह बोल उठा : खुशख़बरी हो येह एक लड़का है, और उन्होंने उसे क़ीमती सामाने तिजारत समझते हुऐ छुपा लिया, और अल्लाह उन कामों को जो वोह कर रहे थे खूब जाननेवाला है।

وَ شَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٤ ١٣

20. और यूसुफ़ (ﷺ) के भाइयोंने (जो मौक़े' पर आ गए थे उसे अपना भगोड़ा गुलाम केह कर उन्ही के हाथों) बहुत कम क़ीमत गिनती के चंद दिरहमों के इवज बेच डाला क्यों कि वोह राहगीर उस (यूसुफ ﷺ के खरीदने) के बारे में (पहले ही) बे रग़बत थे (फिर राहगीरों ने उसे मिस्र ले जा कर बेच दिया)।

العلقة

وَ قَالَ الَّذِی اشۡتَرٰىهُ مِنۡ مِّصۡرَ لِامۡرَاَتِهٖۤ اَكۡرِمِیۡ مَثۡوٰىهُ عَسٰۤی اَنۡ یَّنۡفَعَنَاۤ اَوۡ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوۡسُفَ فِی الۡاَرۡضِ ۫ وَ لِنُعَلِّمَهٗ مِنۡ تَاۡوِیۡلِ الۡاَحَادِیۡثِ ؕ وَ اللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤی اَمۡرِهٖ وَ لٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۱﴾

21. और मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा था (उसका नाम क़त्फ़ीर था और वोह बादशाहे मिस्र रय्यान बिन वलीद का वज़ीरे ख़ज़ाना था उसे उर्फ़े आममें अज़ीज़े मिस्र केहते थे) उसने अपनी बीवी (ज़ुलैख़ा) से कहा : इसे इज़्ज़तो इकरामसे ठेहराओ ! शायद येह हमें नफ़ा' पहुंचाए या हम उसे बेटा बना लें, और इस तरह हमने यूसुफ़ (علیہ السلام) को ज़मीने (मिस्र) में इस्तेहकाम बख़्शा और येह इस लिए कि हम उसे बातों के अंजाम तक पहुंचना (या'नी इल्मे ता'बीरे रूया) सिखाएं, और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَیۡنٰهُ حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۲۲﴾

22. और जब वोह अपने कमाले शबाब को पहुंच गया (तो) हमने उसे हुक्मे (नुबुव्वत) और इल्मे (ता'बीर) अ़ता फ़रमाया और इसी तरह हम नेकू कारों को सिला बख़्शा करते हैं।

وَ رَاوَدَتۡهُ الَّتِیۡ هُوَ فِیۡ بَیۡتِهَا عَنۡ نَّفۡسِهٖ وَ غَلَّقَتِ الۡاَبۡوَابَ وَ قَالَتۡ هَیۡتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّیۡۤ اَحۡسَنَ مَثۡوَایَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفۡلِحُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۳﴾

23. और उस औरत (ज़ुलेखा) ने जिसके घर वोह रेहते थे आपसे आपकी ज़ातकी शदीद ख़्वाहिश की और उसने दरवाज़े (भी) बंद कर दिए और केहने लगी : जल्दी आ जाओ (मैं तुमसे केहती हूं) । यूसुफ़ (علیہ السلام)ने कहा : अल्लाहकी पनाह ! बेशक वोह (जो तुम्हारा शौहर है) मेरा मुरब्बी है उसने मुझे बड़ी इज़्ज़तसे रखा है। बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह़ नहीं पाएंगे।

وَ لَقَدۡ هَمَّتۡ بِهٖ ۚ وَ هَمَّ بِهَا لَوۡ لَاۤ اَنۡ رَّاٰ بُرۡهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ السُّوۡٓءَ وَ الۡفَحۡشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُخۡلَصِیۡنَ ﴿۲۴﴾

24. (यूसुफ علیہ السلام ने इन्कार कर दिया) और बेशक उस (ज़ुलेख़ा) ने (तो) उनका इरादा कर (ही) लिया था, (शायद) वोह भी उस का क़स्द कर लेते अगर उन्होंने अपने रबकी रौशन दलील को न देखा होता। ★ इस तरह (इसलिए किया गया) कि हम उनसे तक्लीफ़ और बेह़याई (दोनों) को दूर रखें, बेशक वोह हमारे चुने हुए (बरगुज़ीदह) बंदों में से थे।

★(या उन्होंने भी उसको ताक़तसे दूर करने का क़स्द कर लिया था। अगर वोह अपने रबकी रौशन दलील को न देख लेते तो अपने दिफ़ाअ़ में सख़्ती कर गुज़रते और मुम्किन है उस दौरान उनका क़मीज़ आगेसे फट जाता जो बाद अज़ां उनके ख़िलाफ़ शहादत और वज्हे तक्लीफ़ बनता, सो अल्लाह की निशानीने उन्हें सख़्ती करने से रोक दिया)

وَ اسْتَبَقَا الْبَابَ وَ قَدَّتْ قَمِيْصَهٗ
مِنْ دُبُرٍ وَّ اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا
الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ
بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۵﴾

25. और दोनों दरवाज़े की तरफ़ (आगे पीछे) दौड़े और उस (ज़ुलेख़ा) ने उनका क़मीज़ पीछे से फाड़ डाला और दोनोंने उसके ख़ाविंद (अज़ीज़े मिस्र) को दरवाज़े के क़रीब पा लिया वोह (फ़ौरन) बोल उठी कि उस शख़्स की सज़ा जो तुम्हारी बीवी के साथ बुराईका इरादा करे और क्या हो सक्ती है सिवाए इसके कि वोह क़ैद कर दिया जाए या (उसे) दर्दनाक अज़ाब (दिया जाए)।

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ
شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ
قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۶﴾

26. यूसुफ (عليه السلام) ने कहा : (नहीं बल्कि) उसने ख़ुद मुझसे मतलब बरारी के लिए मुझे फुसलाना चाहा और (इतने में ख़ुद) उस के घरवालों में से एक गवाहने (जो शीर ख़्वार बच्चा था) गवाही दी कि अगर उसका क़मीज़ आगेसे फटा हुवा है तो येह सच्ची है और वोह झूटों में से है।

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ
فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۷﴾

27. और अगर उसका क़मीज़ पीछे से फटा हुवा है तो येह झूठी है और वोह सच्चों में से है।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ
اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾

28. फिर जब उस (अज़ीज़े मिस्र) ने उनका क़मीज़ देखा (कि) वोह पीछे से फटा हुवा था तो उसने कहा : बेशक येह तुम औ़रतों का फ़रेब है। यक़ीनन तुम औ़रतों का फ़रेब बड़ा (ख़तरनाक) होता है।

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَ
اسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ
مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۲۹﴾ ع

29. ऐ यूसुफ़ ! तुम इस बातसे दर गुज़र करो और (ऐ ज़ुलेख़ा !) तू अपने गुनाह की मुआफ़ी मांग, बेशक तू ही ख़ताकारों में से थी।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ

30. और शहरमें (उमरा की) कुछ औरतोंने केहना (शुरूअ़) कर दिया कि अ़ज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को उससे मतलब बरारी के लिए फुसलाती है, उस (ग़ुलाम) की महब्बत उसके दिल में घर कर गई है, बेशक

ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۝٣٠

हम उसे खुली गुमराही में देख रहे हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتۡ بِمَكۡرِهِنَّ اَرۡسَلَتۡ
اِلَيۡهِنَّ وَ اَعۡتَدَتۡ لَهُنَّ مُتَّكَاً
وَّاٰتَتۡ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنۡهُنَّ سِكِّيۡنًا وَّ
قَالَتِ اخۡرُجۡ عَلَيۡهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيۡنَهٗۤ
اَكۡبَرۡنَهٗ وَقَطَّعۡنَ اَيۡدِيَهُنَّ وَقُلۡنَ
حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنۡ هٰذَاۤ
اِلَّا مَلَكٌ كَرِيۡمٌ ۝٣١

31. पस जब उस (ज़ुलेख़ा) ने उनकी मक्काराना बातें सुनीं (तो) उन्हें बुलवा भेजा और उनके लिए मजलिस आरास्ता की (फिर उनके सामने फल रख दिए) और उनमें से हर एकको एक एक छुरी दे दी और (यूसुफ़ عليه السلام से) दरख़ास्त की कि ज़रा इनके सामने से (हो कर) निकल जाओ (ताकि उन्हें भी मेरी कैफ़िय्यत का सबब मा'लूम हो जाए), सो जब उन्हों ने यूसुफ (عليه السلام के हुस्ने ज़ेबा) को देखा तो उस (के जलवए जमाल) की बड़ाई करने लगीं और वोह (मदहोशी केआ़लममें फल काटने की बजाए) अपने हाथ काट बैठीं और (देख लेने के बाद बेसाख़्ता) बोल उठीं : अल्लाह की पनाह ! येह तो बशर नहीं है येह तो बस कोई बरगुज़ीदह फ़रिश्ता (या'नी आ़लमे बाला से उतरा हुवा नूरका पैकर) है।

قَالَتۡ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىۡ لُمۡتُنَّنِىۡ
فِيۡهِ ؕ وَلَقَدۡ رَاوَدْتُّهٗ عَنۡ نَّفۡسِهٖ
فَاسۡتَعۡصَمَ ؕ وَلَئِنۡ لَّمۡ يَفۡعَلۡ مَاۤ
اٰمُرُهٗ لَيُسۡجَنَنَّ وَلَيَكُوۡنًا مِّنَ
الصّٰغِرِيۡنَ ۝٣٢

32. (ज़ुलेख़ा की तदबीर कामयाब हो गई तब) वोह बोली : येही वोह (पैकरे नूर) है जिसके बारेमें तुम मुझे मलामत करती थीं और बेशक मैं ने ही (अपनी ख़्वाहिश की शिद्दत में) उसे फुसलाने की कोशिश की मगर वोह सरापा इस्मत ही रहा, और अगर (अब भी) उसने वोह न किया जो मैं उसे केहती हूं तो वोह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और वोह यक़ीनन बे आबरू किया जाएगा।

قَالَ رَبِّ السِّجۡنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا
يَدۡعُوۡنَنِىۡۤ اِلَيۡهِ ۚ وَ اِلَّا تَصۡرِفۡ
عَنِّىۡ كَيۡدَهُنَّ اَصۡبُ اِلَيۡهِنَّ
وَاَكُنۡ مِّنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ۝٣٣

33.(अब ज़नाने मिस्र भी ज़ुलेख़ा की हम नवा बन गई थीं) यूसुफ़ (عليه السلام)ने (सबकी बातें सुन कर) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मुझे क़ैदख़ाना इस काम से कहीं ज़ियादह महबूब है जिसकी तरफ़ येह मुझे बुलाती हैं और अगर तूने उनके मक्रको मुझसे न फेरा तो मैं उनकी (बातों की) तरफ़ माइल हो जाऊंगा और मैं नादानों में से हो जाऊंगा।

فَاسۡتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ
عَنۡهُ كَيۡدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ

34. सो उनके रबने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और औरतों के मक्रो फ़रेब को उनसे दूर कर दिया। बेशक

الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

वोही खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ ع

35. फिर उन्हें (यूसुफ़ عليه السلام की पाकबाज़ी की) निशानियां देख लेने के बाद भी येही मुनासिब मा'लूम हुवा कि उसे एक मुद्दत तक क़ैद कर दें (ताकि अ़वाममें इस वाक़िए़ का चर्चा ख़त्म हो जाए)।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ
اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ
وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ
فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ
مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. और उनके साथ दो जवान भी क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एकने कहा : मैंने अपने आपको (ख़्वाब में) देखा है कि मैं (अंगूर से) शराब निचोड़ रहा हूं और दूसरेने कहा : मैंने अपने आपको (ख़्वाब में) देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियां उठाए हुए हूं, उसमें से परिन्दे खा रहे हैं। (ऐ यूसुफ़ !) हमें इसकी ता'बीर बताइए, बेशक हम आपको नेक लोगों में से देख रहे हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا
نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ
ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. यूसुफ़ (عليه السلام)ने कहा : जो खाना (रोज़) तुम्हें खिलाया जाता है वोह तुम्हारे पास आने भी न पाएगा कि मैं तुम दोनों को उसकी ता'बीर तुम्हारे पास उसके आने से क़ब्ल बता दूंगा, येह (ता'बीर) उन उ़लूम में से है जो मेरे रबने मुझे सिखाए हैं। बेशक मैंने उस क़ौमका मज़हब (शुरू ही से) छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वोह आख़िरत के भी मुन्किर हैं।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ
نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ
فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और मैंने तो अपने बापदादा, इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब (عليهم السلام) के दीन की पैरवी कर रखी है, हमें कोई हक़्क़ नहीं कि हम किसी चीज़ को भी अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएं, येह (तौह़ीद) हम पर और लोगों पर अल्लाह का (ख़ास) फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ
مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ
الْقَهَّارُ ؕ ۝٣٩

39. ऐ मेरे क़ैदखाने के दोनों साथीयों ! (बताओ) क्या अलग अलग बहुतसे मा'बूद बेहतर हैं या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ
الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا
اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٠

40. तुम (हक़ीक़त में) अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते हो मगर चंद नामों की जो खुद तुमने और तुम्हारे बापदादाने (अपने पाससे) रख लिए हैं अल्लाहने उनकी कोइ सनद नहीं उतारी। हुक्म का इख़्तियार सिर्फ़अल्लाह को है, उसीने हुक्म फ़रमाया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, येही सीधा रास्ता (दुरस्त दीन) है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا
فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ
فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ
رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ
تَسْتَفْتِيٰنِ ؕ ۝٤١

41. ऐ मेरे क़ैदखाने के दोनों साथियो ! तुम में से एक (के ख़्वाबकी ता'बीर येह है कि वोह) अपने मुरब्बी (या'नी बादशाह) को शराब पिलाया करेगा और रहा दूसरा (जिसने सर पर रोटियां देखी हैं) तो वोह फांसी दिया जाएगा फिर परिन्दे उसके सरसे (गोश्त नोच कर) खाएंगे, (क़त्ई) फ़ैसला कर दिया गया जिसके बारे में तुम दर्याफ़्त करते हो।

وَ قَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ
الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي
السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ؕ ۝٤٢

42. और यूसुफ (عليه السلام) ने उस शख़्स से कहा जिसे उन दोनों में से रिहाई पानेवाला समझा कि अपने बादशाह के पास मेरा ज़िक्र कर देना (शायद उसे याद आ जाए कि एक और बेगुनाह भी क़ैद में है) मगर शैताानने उसे अपने बादशाहके पास (वोह) ज़िक्र करना भुला दिया नतीजतन यूसुफ़ (عليه السلام) कई साल तक क़ैदख़ाने में ठेहरे रहे।

وَ قَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ

43. और (एक रोज़) बादशाहने कहा : मैंने (ख़्वाब में)

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ
يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ
كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾

सात मोटी ताज़ी गायें देखी हैं, उन्हें सात दुब्ली पतली गायें खा रही हैं और सात सब्ज़ खूशे (देखे) हैं और दूसरे (सात ही) खुश्क, ऐ दरबारियो ! मुझे मेरे ख़्वाब का जवाब बयान करो अगर तुम ख़्वाब की ता'बीर जानते हो।

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ
بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾

44. उन्होंने कहा : (येह) परीशां ख़्वाबें हैं और हम परीशां ख़्वाबों की ता'बीर नहीं जानते।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَ ادَّكَرَ
بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ
فَاَرْسِلُوْنِ ﴿۴۵﴾

45. और वोह शख़्स जो उन दोनों में से रिहाई पा चुका था बोला : और (अब) उसे एक मुद्दत के बाद (यूसुफ़ عليه السلام के साथ किया हुवा वा'दा) याद आ गया मैं तुम्हें इसकी ता'बीर बताऊंगा सो तुम मुझे (यूसुफ عليه السلام के पास) भेजो।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَّ سَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى
النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۶﴾

46. (वोह क़ैदखाने में पहुंच कर केहने लगा :) ऐ यूसुफ़, ऐ सिद्क़े मुजस्सम ! आप हमें (इस ख़्वाब की) ता'बीर बता दें कि सात फ़रबा गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात सब्ज़ खूशे हैं और दूसरे सात खुश्क ताकि मैं (येह ता'बीर ले कर) वापस लोगों के पास जाऊं शायद उन्हें (आपकी क़द्रो मन्ज़िलत) मा'लूम हो जाए।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ
دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ
سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा : तुम लोग दाइमी आदत के मुताबिक़ मुसल्सल सात बरस तक काश्त करोगे सो जो खेती तुम काटा करोगे उसे उसके खूशों (ही) में (ज़ख़ीरे के तौर पर) रखते रेहना मगर थोड़ा सा (निकाल लेना) जिसे तुम (हर साल) खा लो।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ
شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ

48. फिर उसके बाद सात (साल) बहुत सख़्त (खुश्क साली के) आएंगे वोह उस (ज़ख़ीरे) को खा जाएंगे जो तुम उनके लिए पेहले जमा' करते रहे थे मगर थोड़ासा

اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾

(बच जाएगा) जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ
يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

ع ٦ ١٢

49. फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों को (खूब) बारिश दी जाएगी और (उस साल इस क़दर फल होंगे कि) लोग उसमें (फलों का) रस निचोडेंगे।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى
رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ
الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ
رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

50. और (येह ता'बीर सुनते ही) बादशाहने कहा : यूसुफ़ (عليه السلام)को (फ़ौरन) मेरे पास ले आओ, पस जब यूसुफ़ (عليه السلام)के पास क़ासिद आया तो उन्होंने कहा : अपने बादशाह के पास लौट जा और उससे (येह) पूछ (कि) उन औ़रतों का (अब) क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट डाले थे? बेशक मेरा रब उनके मक्रो फ़रेब को खूब जाननेवाला है।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ
يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ
لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ
قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ
الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾

51. बादशाहने (ज़ुलेख़ा समेत औरतों को बुला कर) पूछा तुम पर क्या बीता था जब तुम (सब) ने यूसुफ (عليه السلام)को उनकी रास्त रवी से बेहकाना चाहा था (बताओ वोह मुआ़मला क्या था?) वोह सब (बयक ज़बान) बोलीं अल्लाह की पनाह ! हमने (तो) यूसुफ (عليه السلام)में कोई बुराई नहीं पाई। अ़ज़ीज़े मिस्रकी बीवी (ज़ुलेख़ा भी) बोल उठी : अब तो ह़क़ आश्कार हो चुका है (ह़क़ीक़त येह है कि) मैं ने ही उन्हें अपनी मतलब बरारी के लिए फुसलाना चाहा था और बेशक वोही सच्चे हैं।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

52. (यूसुफ़ عليه السلام ने कहा : मैं ने) येह इस लिए (किया है) कि वोह (अ़ज़ीज़े मिस्र जो मेरा मोहूसिनो मुरब्बी था) जान ले कि मैं ने उसकी ग़ियाबत में (पुश्त पीछे) उसकी कोई ख़यानत नहीं की और बेशक अल्लाह ख़यानत करनेवालों के मक्रो फ़रेब को कामयाब नहीं होने देता।